



# युद्धभूमि से आगे: मानवीय सहायता और आपदा राहत के अग्रदूत भारतीय सशस्त्र बल

15 फरवरी, 2026

## मुख्य बिंदु

- भारतीय सशस्त्र बल, देश की संप्रभुता और सीमाओं की रक्षा के अपने मूल दायित्व का निर्वहन करते हुए, मानवीय सहायता, चिकित्सा सहयोग तथा आपदा राहत कार्यों के माध्यम से राष्ट्रीय लचीलापन सुदृढ़ करने में अग्रणी प्रथम प्रतिक्रिया बल के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- वर्ष 2004 की हिंद महासागर सुनामी भारत के आपदा जोखिम निवारण (एचएडीआर) ढांचे के तिए एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। आपदा के अभूतपूर्व पैमाने और व्यापक प्रभाव ने समन्वित विस्तृत प्रतिक्रिया की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से सामने रखा। इस दौरान भारतीय थल सेना, भारतीय नौसेना, भारतीय वायु सेना तथा भारतीय तटरक्षक बल ने भूमि, समुद्र और वायु तीनों क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर जनशक्ति, उपकरण तथा रसद संसाधनों की त्वरित तैनाती कर राहत एवं बचाव अभियानों को प्रभावी रूप से संचालित किया।
- कोविड-19 महामारी के दौरान ऑपरेशन समुद्र सेतु के अंतर्गत 55 दिनों की अवधि में समुद्री मार्ग से 3,992 भारतीय नागरिकों को सुरक्षित स्वदेश वापस लाया गया।
- वर्ष 2025 में भारतीय थल सेना ने दस राज्यों में 80 से अधिक स्थानों पर 141 ट्रकिंग तैनात कीं। इन अभियानों के दौरान 28,293 नागरिकों को सुरक्षित बचाया गया, 7,318 लोगों को चिकित्सा सहायता प्रदान की गई तथा 2,617 व्यक्तियों तक राहत सामग्री पहुंचाई गई।
- मार्च 2025 में ऑपरेशन ब्रह्मा के अंतर्गत म्यांमार में तैनात भारतीय थल सेना के 60 बिस्तरों वाले फील्ड अस्पताल ने मात्र दो सप्ताह के भीतर 2,500 से अधिक भूकंप प्रभावित लोगों को चिकित्सा उपचार प्रदान किया। इसके साथ ही, छह विमानों तथा भारतीय नौसेना के पाँच जहाजों के माध्यम से लगभग 750 मीट्रिक टन आपदा राहत सामग्री प्रभावित क्षेत्रों तक पहुंचाई गई।
- वर्ष 2025 में चक्रवात दितवाह के बाद श्रीलंका में संपर्क व्यवस्था बहाल करने, 2,500 से अधिक लोगों को सुरक्षित निकालने और 1,058 टन राहत सामग्री पहुंचाने के उद्देश्य से ऑपरेशन सागर बंधु संचालित किया गया। इस अभियान के दौरान भारतीय वायु सेना ने विदेशी नागरिकों सहित 264 जीवित बचे लोगों का सफलतापूर्वक निकाला गया।

## परिचय

मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) अभियान भारत की वैश्विक भागीदारी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। भारत प्राकृतिक व मानव निर्मित आपदाओं की बढ़ती आवृत्ति एवं गंभीरता को देखते हुए आपदा प्रबंधन के अपने व्यापक अनुभव का उपयोग करते हुए आंतरिक रूप से और प्रभावित देशों को समय पर, समन्वित तथा सुव्यवस्थित सहायता प्रदान करता है। प्रतिकूल वातावरण में कार्य करने की क्षमता, संगठनात्मक कौशल

व रसद संबंधी जानकारी सशस्त्र बलों को एचएडीआर अभियानों के लिए सबसे उपयुक्त बनाती है और वे अक्सर किसी भी आपदा की स्थिति में पहले प्रतिक्रिया देने वाले होते हैं। एचएडीआर का उद्देश्य आपदाओं के दौरान नागरिक क्षमताओं के चरमरा जाने पर "शीघ्र, कुशल, समन्वित और प्रतिक्रियाशील" प्रतिक्रिया सुनिश्चित करना है। जब नागरिक क्षमताएं सीमित हो जाती हैं, तो भारत सरकार अक्सर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय राहत प्रयासों को बढ़ाने के लिए सशस्त्र बलों को तैनात करती है।



भारत द्वारा अपने सहयोगी देशों को दी जाने वाली मानवीय सहायता एवं आपदा राहत का उद्देश्य आपदा के दौरान और बाद में जीवन बचाने, पीड़ा कम करने व मानवीय गरिमा को बनाए रखने तथा उसकी रक्षा करने के लिए समय पर सहायता प्रदान करना है।

भारतीय सेना बचाव एवं राहत कार्यों के लिए सैनिकों की तैनाती, क्षेत्रीय अस्पतालों की स्थापना, आवश्यक बुनियादी ढांचे की बहाली और मानवीय सहायता पहुंचाने का कार्य करती है। भारतीय नौसेना विदेशों से भारतीय नागरिकों को निकालने, राहत सामग्री के परिवहन और समुद्री एवं तटीय सहायता के लिए जहाजों तथा हेलीकॉप्टरों की तैनाती के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारतीय वायु सेना प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री, चिकित्सा दल और आपदा प्रतिक्रिया कर्मियों को पहुंचाने के साथ-साथ निकासी एवं बचाव अभियान चलाकर रणनीतिक व सामरिक हवाई सहायता प्रदान करती है। इन प्रयासों के पूरक के रूप में, भारतीय तटरक्षक बल चक्रवात, सुनामी, भूकंप, तेल संयंत्रों में आग और तटीय क्षेत्रों में बाढ़ के दौरान सहायता प्रदान करता है, जिससे त्वरित प्रतिक्रिया तथा समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

## उत्पत्ति, नीति और संस्थागत ढांचा

भारत की मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (एचएडीआर) नीति एक सुदृढ़ नीति और संस्थागत संरचना पर आधारित है, जो विदेशों तथा देश के भीतर दोनों जगह मानवीय संकटों के लिए समन्वित, समयबद्ध

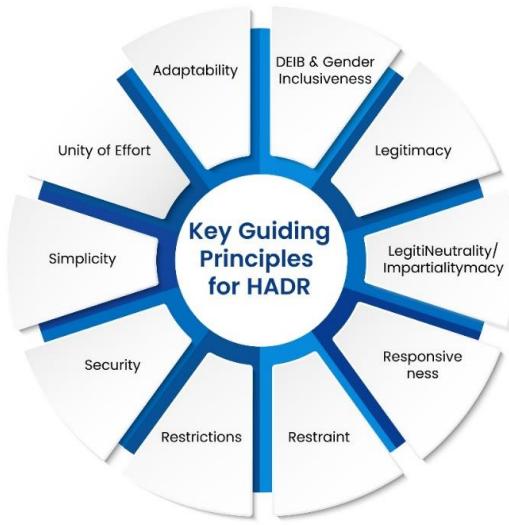
व विश्वसनीय प्रतिक्रियाएं सुनिश्चित करती है। यद्यपि एचएडीआर शब्द मुख्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय कार्यों के लिए प्रयोग किया जाता है, घरेलू आपदा प्रतिक्रिया एक वैधानिक ढांचे के माध्यम से संचालित होती है, जो कूटनीति, रक्षा, आपदा प्रबंधन और सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षमताओं को एकीकृत करने वाले समग्र सरकारी दृष्टिकोण को दर्शाती है।

### नीतिगत ढांचा

अंतर्राष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) अभियानों के लिए भारत का दृष्टिकोण माननीय प्रधानमंत्री के आपदा जोखिम न्यूनीकरण पर 10 सूत्री एजेंडा के एजेंडा संख्या 10 (आपदाओं के प्रति अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया में अधिक सामंजस्य स्थापित करना) द्वारा निर्देशित है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा अक्टूबर 2024 में जारी अंतर्राष्ट्रीय एचएडीआर दिशानिर्देश विदेशों में आपदा प्रतिक्रिया को संस्थागत स्वरूप प्रदान करते हैं। ये प्रभावित देशों की संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून तथा मानवाधिकार मानकों के पालन और पारदर्शिता,

जवाबदेही व नैतिक आचरण जैसे प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित हैं। ये दिशानिर्देश संयुक्त राष्ट्र आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यालय की लैंगिक कार्य योजना (2024) के अनुरूप मानवीय प्रयासों में समावेशिता को भी सुदृढ़ करते हैं। साथ ही, इनमें भारतीय सशस्त्र बलों को त्वरित प्रतिक्रिया के प्रमुख प्रवर्तक के रूप में औपचारिक मान्यता दी गई है, जिनकी भूमिका रणनीतिक एयरलिफ्ट, रसद प्रबंधन, चिकित्सा सहायता, निकासी एवं इंजीनियरिंग कार्यों में अनिवार्य मानी गई है और ड्रोन तथा एआई आधारित पूर्वानुमान जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों के बढ़ते उपयोग पर विशेष जोर दिया गया है।

घरेलू स्तर पर, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 द्वारा शासित होती है, जो राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर पर एनडीएमए, एसडीएमए तथा यूडीएमए/डीडीएमए के माध्यम से एक त्रिस्तरीय संस्थागत ढांचा स्थापित करता है। भारत में, आपदा प्रतिक्रिया की प्राथमिक जिम्मेदारी राज्य सरकारों की होती है, जबकि केंद्र सरकार वित्तीय, रसद और तकनीकी सहायता प्रदान करते हुए सहायक व समन्वयकारी भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय स्तर पर, प्रमुख आपदाओं के दौरान समग्र कमान, नियंत्रण और समन्वय की देखरेख कैबिनेट सचिव के अधीन राष्ट्रीय संकट प्रबंधन समिति (एनसीएमसी) द्वारा की जाती है, जिसमें गृह मंत्रालय (एमएचए) आपदा प्रतिक्रिया के लिए नोडल मंत्रालय के रूप में कार्य करता है। राष्ट्रीय कार्यकारी समिति (एनईसी) अंतर-मंत्रालयी कार्यों का समन्वय करती है, जबकि जमीनी स्तर पर प्रतिक्रिया का नेतृत्व जिला मजिस्ट्रेट के अधीन जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण करते हैं, जो घटना कमान टीमों (आईसीटी) के माध्यम से कार्य करते हैं। यह अधिनियम नागरिक प्राधिकरणों को सहायता के सिद्धांत के तहत नागरिक-सैन्य समन्वय के लिए कानूनी सहायता भी प्रदान करता है।



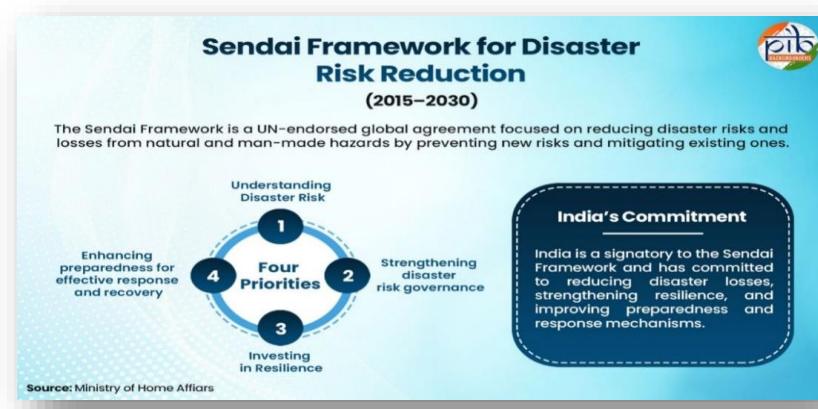
## शामिल प्रमुख संस्थान

- विदेश मंत्रालय (एमईए): भारत की विदेशी आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) गतिविधियों के लिए नोडल मंत्रालय, जो राजनयिक समन्वय, प्रभावित राज्यों से प्राप्त अनुरोधों और अंतरराष्ट्रीय संपर्क के उद्देश्य पूर्ति में जिम्मेदार है।
- त्वरित प्रतिक्रिया प्रकोष्ठ (आरआरसी), विदेश मंत्रालय: 2021 में स्थापित, प्रारंभ में कोविड-19 समन्वय के लिए आरआरसी अब विदेशी आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) हेतु एक केंद्रीय समन्वय केंद्र के रूप में कार्य करता है, जो एनडीएमए, एनडीआरएफ, सशस्त्र बलों, भारतीय विमानपतन प्राधिकरण और अन्य केंद्रीय मंत्रालयों के साथ समन्वय स्थापित करता है।
- गृह मंत्रालय (एमएचए): गृह मंत्रालय का 24x7 कार्यरत एकीकृत आपातकालीन प्रतिक्रिया नियंत्रण कक्ष (आईसीआर-ईआर), एनडीएमए, एनडीआरएफ और विदेश मंत्रालय के समन्वय से आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) गतिविधियों का समन्वय करता है और विदेश मंत्रालय और अन्य हितधारकों के साथ घनिष्ठ सहयोग से भारत से अंतरराष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण मिशनों का समन्वय करता है।
- गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय के समन्वय से, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) गतिविधियों के लिए केंद्रीय नियंत्रण कक्ष संचालन का प्रबंधन करता है और अन्य हितधारकों के साथ घनिष्ठ सहयोग से भारत से अंतरराष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण मिशनों का समन्वय करता है।
- रक्षा मंत्रालय के अधीन एकीकृत रक्षा स्टाफ मुख्यालय (एचक्यू आईडीएस): रणनीतिक परिवहन, रसद, चिकित्सा सहायता, इंजीनियरिंग क्षमताएं और त्वरित तैनाती संसाधन प्रदान करता है।
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए): यह सर्वोच्च नीति निकाय है जो अंतरराष्ट्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण सहित आपदा प्रतिक्रिया के लिए दिशानिर्देश और समन्वय तंत्र तैयार करता है।
- राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ): आवश्यकता पड़ने पर विशेष आपदा प्रतिक्रिया दल तैनात करता है।
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएच एंड एफडब्ल्यू): आपातकालीन चिकित्सा दल, रोग निगरानी, वैशिक समन्वय और समावेशी स्वास्थ्य सेवा वितरण के माध्यम से आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) में चिकित्सा व जन स्वास्थ्य सहायता का नेतृत्व करता है। जन स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन और अन्य स्वास्थ्य एजेंसियों के साथ समन्वय करता है।

ये सभी संस्थाएं और दिशानिर्देश मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि भारत की आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) प्रतिक्रियाएं सुनियोजित, त्वरित व रणनीतिक रूप से सुसंगत हों।

इस रूपरेखा के अंतर्गत त्वरित तैनाती में सशस्त्र बलों की भूमिका को अनिवार्य रूप से परिभाषित किया गया है, जिसमें ड्रोन तथा पूर्वानुमान आधारित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी उन्नत प्रौद्योगिकियों के एकीकरण पर विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन

प्राधिकरण के आपदा जोखिम न्यूनीकरण दिशानिर्देश आपदा राहत अभियानों में भारतीय सशस्त्र बलों की केंद्रीय भूमिका को औपचारिक मान्यता प्रदान करते हैं। इसके अंतर्गत भारतीय थल सेना को आवश्यकतानुसार सैनिकों की तैनाती एवं क्षेत्रीय अस्पताल स्थापित करने की जिम्मेदारी दी गई है; भारतीय वायु सेना राहत कर्मियों और चिकित्सा सहायता के त्वरित परिवहन तथा प्रभावित लोगों की निकासी का दायित्व निभाती है; भारतीय नौसेना जहाजों के माध्यम से निकासी व राहत सामग्री के परिवहन में योगदान देती है; जबकि भारतीय तटरक्षक बल चक्रवात और सुनामी जैसी समुद्री आपदाओं के दौरान महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है। यह समन्वित दृष्टिकोण आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए सेंडाइ फ्रेमवर्क (2015-2030) के तहत आपदा तैयारी, लचीलापन, प्रभावी प्रतिक्रिया और समन्वित पुनर्प्राप्ति पर आधारित भारत की वैशिक प्रतिबद्धताओं के अनुरूप है।



## घरेलू मानवीय पहल

भारतीय सशस्त्र बलों को बाढ़, चक्रवात, भूकंप, भूस्खलन एवं औद्योगिक या परिवहन दुर्घटनाओं सहित राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया के लिए नियमित रूप से जुटाया जाता है और वे राष्ट्रीय आपदा जोखिम प्रबंधन (एचएडीआर) प्रणाली, राष्ट्रीय आपदा रक्षा बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा प्रतिक्रिया बलों तथा असैन्य प्रशासन के साथ मिलकर राष्ट्रीय आपदा जोखिम प्रबंधन (एचएडीआर) ढांचे के अभिन्न अंग के रूप में कार्य करते हैं। ये मिशन बचाव, राहत, चिकित्सा सहायता, निकासी और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की बहाली के लिए वायु, भूमि तथा समुद्री संसाधनों को तेजी से तैनात करने की सेवाओं की क्षमता को प्रदर्शित करते हैं।

**हिंद महासागर सुनामी (2004)** वर्ष 2004 की हिंद महासागर सुनामी भारत के आपदा जोखिम निवारण (एचएडीआर) ढांचे के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। इस आपदा के विशाल पैमाने और व्यापक भौगोलिक फैलाव के कारण अभूतपूर्व और समन्वित प्रतिक्रिया की आवश्यकता पड़ी। इसमें सेना, नौसेना, वायु सेना और तटरक्षक बल की संयुक्त तैनाती शामिल थी, जिसमें भूमि, समुद्र और वायु क्षेत्रों में भारी मात्रा में जनशक्ति, उपकरण और रसद जुटाए गए थे। ऑपरेशन सीवेव के तहत, भारतीय वायु सेना ने 26 दिसंबर 2004 को कार्निक हवाई अड्डे से एमआई-8 हेलीकॉप्टरों के साथ तत्काल खोज और बचाव अभियान शुरू करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में

निरंतर दैनिक अभियानों में आईएल-76, एएन-32, एचएस-748 विमानों और हेलीकॉप्टरों का उपयोग किया गया, जिससे राहत सामग्री की बड़े पैमाने पर हवाई दुलाई, जीवित बचे लोगों को निकालना तथा खोज एवं बचाव अभियान चलाना संभव हुआ। इस अभियान के तहत श्रीलंका और मालदीव को भी मानवीय सहायता प्रदान की गई, जिसमें एचएस-748 विमान तथा एमआई-8/एमआई-17 हेलीकॉप्टरों ने प्रतिदिन परिचालन करते हुए लगभग 17 टन राहत सामग्री का परिवहन किया और आवश्यकतानुसार कर्मियों को निकाला। इसने भविष्य में तीनों सेनाओं के बीच मानवीय सहायता और आपदा प्रबंधन (एचएडीआर) समन्वय के लिए एक आदर्श स्थापित किया।

राज्यों और भारत सरकार द्वारा शुरू किए गए व्यापक राहत एवं बचाव अभियानों ने स्थिति को शीघ्र ही सामान्य करने में मदद की। सेना, नौसेना, वायु सेना, टटरक्षक बल और अर्धसैनिक बलों के लगभग 20,900 कर्मियों को तैनात किया गया था। 40 नौसेना/टटरक्षक जहाज, 34 विमान और 42 हेलीकॉप्टर इस व्यापक अभियान का हिस्सा थे। मुख्य भूमि पर 28,734 लोगों को बचाया गया तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के पर्यटकों सहित 6000 से अधिक फंसे हुए लोगों को मुख्य भूमि पर लाया गया। कुल मिलाकर 6.36 लाख लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया और उन्हें 930 राहत शिविरों में रखा गया।

### मालदीव को सहायता (ऑपरेशन कैस्टर)

मालदीव के लिए तीन पोत रवाना किए गए। ये पोत आईएनएस मैसूर, आईएनएस उदयगिरि और आईएनएस आदित्य थे। आईएनएस मैसूर में दो हेलीकॉप्टर थे और अन्य पोतों में एक-एक थे। आईएनएस आदित्य में पानी और एक जल शोधन संयंत्र था। चिकित्सा दल, चिकित्सा सामग्री और राहत उपकरण भी पोतों पर मौजूद थे। आईएनएस मैसूर 28 दिसंबर, 2004 को, आईएनएस उदयगिरि 29 दिसंबर, 2004 को और आईएनएस आदित्य 30 दिसंबर, 2004 को मालदीव पहुंचे।

### श्रीलंका को सहायता (ऑपरेशन रेनबो)

समुद्र में लापता मछुआरों और नौकाओं की खोज में सहायता के लिए श्रीलंका के अनुरोध पर हमारी नौसेना ने कार्रवाई की। इसके अतिरिक्त, 26 दिसंबर, 2004 को एक डोर्निंयर विमान ने कोलंबो में एक चिकित्सा दल और 600 किलोग्राम चिकित्सा सामग्री उतारी। श्रीलंका के लिए चार पोत रवाना किए गए थे। आईएनएस शारदा और आईएनएस सतलुज गाल की ओर रवाना हुए। वे 27 दिसंबर 2004 को त्रिंकोमाली पहुंचे। त्रिंकोमाली के लिए दो पोत रवाना किए गए थे और वे भी 27 दिसंबर 2004 को वहां पहुंचे। ये पोत आईएनएस संधायक और आईएनएस सुकन्या थे। सभी पोतों में हेलीकॉप्टर और गोताखोर मौजूद थे। चिकित्सा दल, चिकित्सा सामग्री और राहत उपकरण भी साथ थे।

**उत्तराखण्ड में बाढ़ (जून 2013)** वर्ष 2013 की उत्तराखण्ड आपदा में, विभिन्न सैन्य बलों (सेना, भारतीय वायु सेना, आईटीबीपी और एनडीआरएफ) ने बड़े पैमाने पर बचाव एवं निकासी अभियान चलाए; भारतीय वायु सेना (ऑपरेशन राहत) व सेना (ऑपरेशन सूर्य होप) ने हजारों उड़ानें भरीं तथा बड़ी संख्या में फंसे हुए लोगों को बचाया/निकाला। भारतीय वायु सेना ने विभिन्न स्थानों पर 730 मीट्रिक टन आवश्यक सामग्री गिराई। उत्तराखण्ड आपदा 2013 में बचाव अभियान के दौरान सी-130 जे "सुपर हरक्यूलिस", एमआई-26, एमएलएच, एलएच, चीता और एमआई-17वी5 विमानों का उपयोग किया गया।

**जम्मू और कश्मीर में बाढ़ (सितंबर 2014)** भारतीय वायु सेना ने 2014 में जम्मू-कश्मीर में आई बाढ़ के दौरान बड़े पैमाने पर बचाव और राहत कार्यों में सहयोग के लिए ऑपरेशन मेघ राहत शुरू किया था। भारतीय सेना, राष्ट्रीय वायु सेना (एनडीआरएफ) और नागरिक एजेंसियों के समन्वय से लगभग 70 भारतीय वायु सेना के विमान तैनात किए गए थे, जिन्होंने 96,000 से अधिक लोगों को बचाया तथा प्रभावित क्षेत्रों में 3,500 टन से अधिक राहत सामग्री हवाई मार्ग से पहुंचाई। राहत कार्यों में लगभग 2,18,000 नागरिकों को चिकित्सा सहायता, आश्रय और भोजन प्रदान करना शामिल था। राहत कार्यों के लिए एक अधिकारी के नेतृत्व में 10 गोताखोरों वाली भारतीय नौसेना की एक गोताखोरी टीम, दो जेमिनी नौकाओं, गोताखोरी और बचाव उपकरणों के साथ तैनात की गई थी।



**केरल में बाढ़ (अगस्त 2018)** रक्षा बलों और राष्ट्रीय

रक्षा बल/राष्ट्रीय संसाधनों ने इस अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिसमें 40 हेलीकॉप्टर, 31 विमान, 182 बचाव दल, रक्षा बलों के 18 चिकित्सा दल, 58 राष्ट्रीय रक्षा बल दल और 500 से अधिक नौकाओं का उपयोग किया गया; 60,000 से अधिक लोगों को बचाया गया या राहत शिविरों में पहुंचाया गया। भारतीय वायु सेना और नौसेना के वायु/समुद्री संसाधनों ने राहत सामग्री की व्यापक हवाई ढुलाई और हवाई-छिड़काव किया।

**चक्रवात फानी (मई 2019)** भारतीय नौसेना ने ओडिशा तट पर आपदा राहत एवं बचाव कार्यों के लिए जहाजों और टीमों (चिकित्सा दल, गोताखोर व राहत सामग्री) को पहले से तैनात कर दिया था। केंद्र सरकार की प्रतिक्रिया में कई राष्ट्रीय रक्षा बल (एनडीआरएफ) टीमों, सेना के इंजीनियरिंग दस्तों, विमानों/हेलीकॉप्टरों और नौसेना के जहाजों की तैनाती शामिल थी। चक्रवात 'फानी' के दौरान, सरकार ने राहत और बचाव कार्यों के लिए सेना के 19 दस्ते, इंजीनियरिंग टास्क फोर्स (ईटीएफ) के 9 दस्ते, 27 विमान/हेलीकॉप्टर तथा सशस्त्र बलों के 16 जहाज तैनात किए थे।

**चक्रवात अम्फन (मई 2020)** पूर्वी भारत, विशेष रूप से पश्चिम बंगाल और ओडिशा में, तूफान के आने से पहले व बाद में, भारतीय वायु सेना ने उच्च स्तर की तैयारी बनाए रखी तथा राहत कार्यों में सहयोग दिया, जबकि केंद्र/राज्य एजेंसियों ने निकासी एवं राहत कार्यों का समन्वय किया। भारतीय वायु सेना द्वारा कुल 56 भारी और मध्यम भार वहन सामग्री तैनात की गई थीं, जिनमें 25 स्थिर-पंख विमान तथा 31 हेलीकॉप्टर भी शामिल थे।

**हिमनदी झील का विस्फोट, दक्षिण ल्होनक (अक्टूबर 2023)** सिक्किम के सुदूर उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में स्थित दक्षिण ल्होनक में हिमनदी झील के फटने से तीस्ता नदी में लगभग 50-60 फीट का उफान

आया। लाचुंग के बर्फ से ढके इलाकों और पूर्वी सिक्किम के अग्रिम क्षेत्रों में फंसे नागरिकों को बचाने के लिए हिमराहत अभियान शुरू किया गया। 1,247 पर्यटकों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया।

**एनएचआईडीसीएल सुरंग बचाव अभियान (नवंबर 2023)** उत्तराखण्ड में निर्माणाधीन सिल्क्यारा-दंडलगांव सुरंग के 12 नवंबर 2023 को ढह जाने तथा 41 श्रमिकों के फंस जाने के बाद, भारतीय सेना ने बचाव कार्य में सहायता के लिए तुरंत इंजीनियर दल और सुरंग निर्माण विशेषज्ञों को तैनात किया। यह अभियान 29 नवंबर 2023 को सफलतापूर्वक समाप्त हुआ और सभी श्रमिकों को सुरक्षित बचा लिया गया।

**चक्रवात मिचौंग, चेन्नई (दिसंबर 2023)** भारतीय सेना ने 4 दिसंबर 2023 को भारी बारिश और अड्ड्यार नदी और मनपक्कम नहर में आई बाढ़ के बाद, 230 नागरिकों को बचाया और 7 दिसंबर को अभियान समाप्त किया। 18 दिसंबर 2023 को बाढ़ राहत अभियान के तहत, सेना की दो टुकड़ियों ने चेन्नई के जलमग्न क्षेत्रों से 1,083 नागरिकों को बचाया।

**राष्ट्रव्यापी बाढ़ और भूस्खलन राहत अभियान (2024)** भारतीय सेना ने आपदा राहत कार्यों में सहायता के लिए चौथे राज्यों में इको टास्क फोर्स (ईटीएफ) सहित 83 टुकड़ियां तैनात कीं। इन अभियानों के दौरान 29,972 नागरिकों को बचाया गया, लगभग 3,000 लोगों को चिकित्सा सहायता प्रदान की गई और 13,000 से अधिक नागरिकों को राहत सामग्री वितरित की गई। मणिपुर (मई 2024), वायनाड, केरल (जुलाई 2024), उत्तराखण्ड (जुलाई 2024) और गुजरात (अगस्त 2024) में प्रमुख राहत कार्य किए गए।

**राष्ट्रव्यापी बाढ़ और भूस्खलन राहत अभियान (2025)** साल 2025 के दौरान, भारतीय सेना ने इंजीनियर टास्क फोर्स सहित 141 टुकड़ियों को दस राज्यों में फैले 80 से अधिक स्थानों पर तैनात किया। इन अभियानों के परिणामस्वरूप 28,293 नागरिकों को बचाया गया, 7,318 व्यक्तियों को चिकित्सा सहायता प्रदान की गई और 2,617 लोगों को राहत सामग्री वितरित की गई।

असम (कोयला खनिक बचाव अभियान, जनवरी 2025), तेलंगाना (सुरंग बचाव अभियान, फरवरी 2025) और उत्तराखण्ड (चमोली जिले में हिमस्खलन बचाव अभियान, फरवरी 2025 तथा धराली बादल फटने बचाव अभियान, अगस्त 2025) में प्रमुख राहत अभियान चलाए गए। मणिपुर और त्रिपुरा (जून 2025), जम्मू - कश्मीर तथा पंजाब (अगस्त 2025) व महाराष्ट्र (सितंबर 2025) में अतिरिक्त बाढ़ राहत अभियान चलाए गए।

## प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय आपदा जोखिम प्रबंधन अभियान/निकासी/राहत अभियान

भारत ने हिंद महासागर क्षेत्र और उससे भी आगे एक विश्वसनीय प्राथमिक प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में अपनी पहचान स्थापित की है, जो विश्व भर में संकटों के दौरान समय पर मानवीय सहायता, निकासी और राहत अभियान चलाता है। सरकार के "वसुधैव कुटुंबकम" और सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा एवं विकास) के दृष्टिकोण के तहत भारतीय सेना, नौसेना तथा वायु सेना के समन्वित प्रयास वैश्विक शांति व करुणा के प्रति भारत की अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। अप्रैल 2025 में कारवार (कर्नाटक) से कोमोरोस, केन्या, मेडागास्कर, मालदीव, मॉरीशस, मोज़ाम्बिक, सेशेल्स, श्रीलंका और तंजानिया के 44 नौसेनिक कर्मियों के साथ आईएनएस सुनयना को आईओएस सागर के रूप में रखाना करना,

सामूहिक समुद्री सुरक्षा, क्षमता निर्माण व सहयोग के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को उजागर करता है। यह हिंद महासागर क्षेत्र में साझा विकास और स्थिरता के सागर के दृष्टिकोण को मजबूत करता है। ये सभी गतिविधियां मिलकर भारत के विकसित हो रहे आपदा जोखिम प्रबंधन (एचएडीआर) और समुद्री पहुंच सिद्धांत को दर्शाती हैं, जहां भूमि पर त्वरित आपदा प्रतिक्रिया, सक्रिय नौसैनिक कूटनीति और सामूहिक सुरक्षा प्रयासों की पूरक है।

**ऑपरेशन मैत्री (नेपाल, 2015)** ऑपरेशन मैत्री अप्रैल 2015 में आए नेपाल भूकंप के बाद भारत की त्वरित प्रतिक्रिया थी; इसमें भारतीय वायु सेना के विमानों, सेना के इंजीनियर टास्क फोर्स, एनडीआरएफ टीमों और विदेश मंत्रालय की कूटनीति का समन्वित उपयोग शामिल था। नेपाल में भूकंप के चार घंटे के भीतर ही, भारतीय वायु सेना ने राहत अभियान शुरू किया और 11,200 लोगों को बचाया। इसने 295 एनडीआरएफ कर्मियों, 46.5 टन राहत सामग्री और पांच खोजी कुत्तों को एयरलिफ्ट करने के लिए सी-130जे, सी-17 तथा आईएल-76 विमानों का इस्तेमाल किया। बड़े में सी-130जे सुपर हरक्यूलिस, सी-17 ग्लोबमास्टर III, आईएल-76 गजराज, एन-32 और आठ एमआई-17 श्रृंखला के मध्यम-लिफ्ट हेलीकॉप्टर (एमआई-17 वी5 सहित) शामिल थे। इसके अलावा, भारत ने नेपाल के लिए एक बड़े पुनर्निर्माण सहायता पैकेज की घोषणा की, जिसमें भूकंप के बाद राहत और दीर्घकालिक विकास सहायता के हिस्से के रूप में एक महत्वपूर्ण अनुदान घटक सहित 1 अरब अमेरिकी डॉलर देने का वादा किया गया। यह पहले से मौजूद 1 अरब अमेरिकी डॉलर के द्विपक्षीय सहायता कार्यक्रम के अतिरिक्त था, जिससे भारत की कुल प्रतिबद्धता पांच वर्षों में 2 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गई।

**ऑपरेशन देवी शक्ति (अफगानिस्तान, 2021)** इस अभियान के तहत, भारत ने 2021 में अफगानिस्तान से 669 लोगों को निकाला, जिनमें 448 भारतीय नागरिक, अल्पसंख्यक समुदायों के 206 अफगान नागरिक और 15 विदेशी नागरिक शामिल थे। इसके लिए भारतीय वायु सेना और एयर इंडिया की उड़ानों का इस्तेमाल किया गया। 10 दिसंबर को एक विशेष उड़ान से 10 भारतीय, 94 अफगान नागरिक और गुरु ग्रंथ साहिब के 2 स्वरूपों के साथ प्राचीन हिंदू पांडुलिपियां वापस लाई गईं। सरकार ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाँच पवित्र स्वरूपों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की और काबुल के इंदिरा गांधी बाल अस्पताल के लिए चिकित्सा राहत सामग्री भेजी, जिसे विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अधिकारियों को सौंप दिया गया।

#### सागर मिशन के अंतर्गत नौसेना द्वारा मानवीय सहायता

**पहुंचाना:** प्रधानमंत्री के सागर (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा एवं विकास) के दृष्टिकोण के तहत मई 2020 में शुरू किए गए सागर मिशन के तहत भारतीय नौसेना ने हिंद महासागर के विभिन्न देशों को मानवीय सहायता पहुंचाने के लिए लगातार तैनाती की है। कोविड-19 के दौरान, आईएनएस केसरी, आईएनएस ऐरावत व अन्य जहाजों ने मालदीव, मारीशस, सेशल्स, मेडागास्कर, कोमोरोस, सूडान तथा मोज़ाम्बिक सहित 15 देशों को 3,000 मीट्रिक टन से अधिक खाद्य सहायता, 300



मीट्रिक टन तरल चिकित्सा ऑक्सीजन, 900 ऑक्सीजन सांद्रक और 20 आईएसओ कंटेनर प्रदान किए। रक्षा और विदेश मंत्रालयों के साथ घनिष्ठ समन्वय से चलाए गए ये मिशन, क्षेत्र में पहले प्रतिक्रिया देने वाले देश के रूप में भारत की भूमिका को पुष्ट करते हैं।

**ऑपरेशन समुद्र सेतु (2020)** 5 मई 2020 को शुरू किया गया, ऑपरेशन समुद्र सेतु, जिसका अर्थ है "समुद्री पुल", कोविड-19 के दौरान भारतीय नौसेना का एक व्यापक समुद्री निकासी अभियान था। लगभग 55 दिनों में, इस अभियान के तहत आईएनएस जलश्व, आईएनएस ऐरावत, आईएनएस शार्टुल और आईएनएस मगर जैसे जहाजों का उपयोग करते हुए 23,000 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय करके 3,992 भारतीय नागरिकों को समुद्र के रास्ते वापस लाया गया।

**ऑपरेशन गंगा (यूक्रेन, 2022)** फरवरी-मार्च 2022 में, भारत ने यूक्रेन संघर्ष के दौरान एक व्यापक निकासी अभियान चलाया, जिसमें 90 उड़ानों (76 वाणिज्यिक और 14 भारतीय वायु सेना) के माध्यम से 18,282 नागरिकों को बचाया गया। भारत सरकार ने इस अभियान का पूरा खर्च वहन किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि छात्रों और उनके परिवारों को निकासी का कोई खर्च न उठाना पड़े।

**ऑपरेशन दोस्त (तुर्किये और सीरिया, 2023)** 6 फरवरी 2023 को सीरिया और दक्षिणपूर्वी तुर्किये के इलाकों में 7.8 तीव्रता का भूकंप आया। इस आपदा की भयावहता को देखते हुए तत्काल वैश्विक कार्रवाई की आवश्यकता थी। भारत सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वाले देशों में से था। इसने प्रभावित क्षेत्रों में तेजी से मानवीय सहायता पहुंचाई। मानवीय सहायता और आपदा राहत में अपने व्यापक अनुभव का लाभ उठाते हुए, भारत ने इस महत्वपूर्ण अवधि के दौरान तुर्किये की सहायता के लिए संसाधनों को तुरंत जुटाया। तुर्किये में भूकंप के प्रति भारत की मानवीय प्रतिक्रिया के तहत, 2023 में ऑपरेशन दोस्त शुरू किया गया। हाटे प्रांत के इस्केंडरून में 99 चिकित्सा विशेषज्ञों तथा पैरामेडिक्स के साथ एक भारतीय सेना का फील्ड अस्पताल स्थापित किया गया, जिसने 1,000 से अधिक चिकित्सा परामर्श प्रदान किए, 4 बड़ी तथा 58 छोटी सर्जरी कीं और प्रभावित नागरिकों के लिए व्यापक निदान एवं आपातकालीन देखभाल की। इसके अलावा, भारतीय सेना के 30 बिस्तरों वाले एक आत्मनिर्भर फील्ड अस्पताल की स्थापना के लिए कर्मियों और उपकरणों को भेजा गया है। भारत ने 5 सी-17 भारतीय वायु सेना के विमानों के माध्यम से 250 से अधिक कर्मियों, विशेष उपकरणों और 135 टन से अधिक अन्य राहत सामग्री को तुर्किये भेजा है। सीरिया के लिए, एक सी-130जे भारतीय वायु सेना के विमान द्वारा 6 टन से अधिक आपातकालीन राहत सहायता दमिश्क पहुंचाई गई है।

**ऑपरेशन कावेरी (सूडान, अप्रैल 2023)** 19 अप्रैल 2023 को शुरू किया गया ऑपरेशन कावेरी, भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा भारतीय वायु सेना और भारतीय नौसेना के संसाधनों का उपयोग करते हुए चलाया गया एक समन्वित निकासी अभियान था। भारतीय सेना द्वारा भारतीय नागरिकों के लिए कुल 2,171 रेडी-टू-ईट भोजन (एमआरई) उपलब्ध कराए गए। निकासी अभियान पोर्ट सूडान से जेद्दाह और फिर जेद्दाह से भारत तक चलाए गए, जिससे सभी विस्थापितों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित हुई।

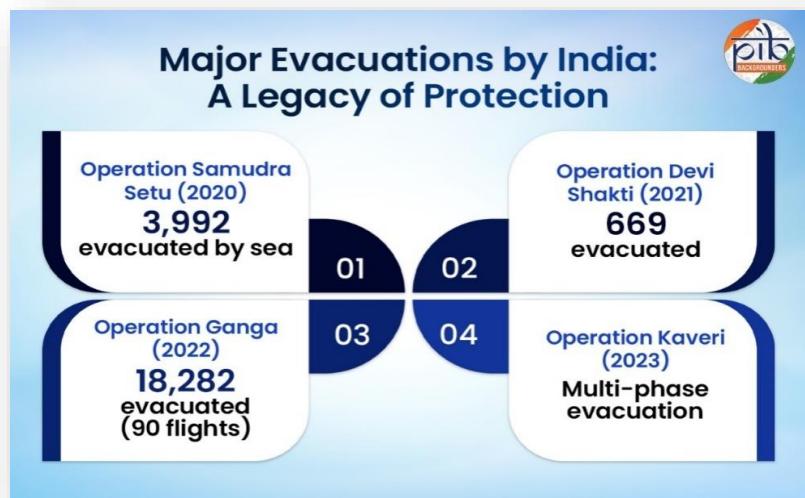
**ऑपरेशन ब्रह्मा (म्यांमार, 2025)** ऑपरेशन ब्रह्मा के तहत, भूकंप प्रभावित म्यांमार को भारत की मानवीय सहायता अप्रैल 2025 के मध्य तक जारी रही, जिससे राहत, चिकित्सा देखभाल और बुनियादी ढांचागत सहायता को मजबूती मिली। 28 मार्च को आई इस आपदा के बाद से भारत सबसे पहले सहायता पहुंचाने वाला देश रहा है, जिसने लगभग 750 टन मानवीय सहायता सामग्री भेजी है, जिसमें आवश्यक दवाएं, अनाज, तंबू, कंबल, तुरंत तैनात किए जा सकने वाले शल्य चिकित्सा और चिकित्सा आश्रय, जल स्वच्छता व पेयजल तथा पूर्वनिर्मित कार्यालय संरचनाएं शामिल हैं। 200 बिस्तरों वाले एक क्षेत्रीय अस्पताल में 2,500 से अधिक रोगियों का इलाज किया गया, जबकि एनडीआरएफ की 80 सदस्यीय भारी शहरी खोज एवं बचाव टीम और भारतीय सेना की 127 सदस्यीय क्षेत्रीय अस्पताल टीम को मौजूदा प्रयासों में सहयोग के लिए तैनात किया गया था। समुद्री मोर्चे पर, पूर्वी नौसेना कमान के अंतर्गत संचालित भारतीय नौसेना

के जहाज सतपुरा और सावित्री 29 मार्च 2025 को 40 टन राहत सामग्री लेकर यांगोन के लिए रवाना हुए, जिसे 31 मार्च 2025 को यांगोन के मुख्यमंत्री को सौंप दिया गया। अंडमान और निकोबार कमान से तैनात भारतीय नौसेना के जहाज कर्मुक तथा एलसीयू 52 30 मार्च 2025 को 30 टन राहत सामग्री लेकर यांगोन के लिए रवाना हुए, जिसमें आवश्यक वस्त्र, पेयजल, भोजन, दवाएं और आपातकालीन सामग्री से युक्त राहत सामग्री के पैलेट शामिल थे। ये खेप 1 अप्रैल 2025 को यांगोन बंदरगाह पर सौंप दी गईं।

इसके अतिरिक्त, भारतीय नौसेना का जहाज घड़ियाल 1 अप्रैल 2025 को विशाखापत्तनम बंदरगाह से यांगोन के लिए रवाना हुआ और म्यांमार में प्रभावित आबादी की तत्काल खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से 442 मीट्रिक टन खाद्य सहायता सामग्री पहुंचाई, जिसमें 405 मीट्रिक टन चावल, 30 मीट्रिक टन खाना पकाने का तेल, 5 मीट्रिक टन बिस्कुट तथा 2 मीट्रिक टन इंस्टेंट नूडल्स शामिल थे।

समुद्री प्रयासों के पूरक के रूप में, भारतीय वायु सेना के एक सी-130जे विमान ने लगभग 16 टन राहत सामग्री का परिवहन किया, जिसमें तंबू, जनरेटर, पीने का पानी, खाद्य सामग्री और आवश्यक दवाएं शामिल थीं। 15 अप्रैल को, भारतीय वायु सेना ने म्यांमार के पुनर्निर्माण के प्रति भारत की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए, नेप्यीडॉ के लिए 20 पूर्वनिर्मित कार्यालय मॉड्यूल भेजे।

**ऑपरेशन सागर बंधु (2025)** 28 नवंबर 2025 को शुरू किए गए ऑपरेशन सागर बंधु के तहत, भारत चक्रवात दितवाह के बाद श्रीलंका को व्यापक राहत और आपदा राहत सहायता प्रदान करना जारी रखे हुए है। 9 दिसंबर 2025 तक, भारत ने लगभग 1,058 टन राहत सामग्री पहुंचाई है, जिसमें सूखा



राशन, टैंट, तिरपाल, स्वच्छता किट, कपड़े, जल शोधन किट और लगभग 4.5 टन दवाएं तथा शल्य चिकित्सा उपकरण शामिल हैं, साथ ही 60 टन विशेष उपकरण भी भेजे गए हैं। भारतीय नौसेना के जहाजों आईएनएस विक्रांत, आईएनएस उदयगिरि, आईएनएस सुकन्या, आईएनएस घड़ियाल और एलसीयू एल51, एल54 और एल57 ने तमिलनाडु से कोलंबो तथा त्रिकोमाली तक 1,000 टन से अधिक राहत सामग्री पहुंचाई। आईएएफ के एमआई-17 हेलीकॉप्टरों ने 264 जीवित बचे लोगों को निकाला और 50 टन आपूर्ति हवाई मार्ग से पहुंचाई, जबकि 2,500 से अधिक फंसे हुए भारतीयों को निकाला गया, जिनमें से 400 को आईएएफ के विमानों द्वारा लाया गया। माहियांगनाया में स्थित एक पैरा फील्ड अस्पताल में 2,200 से अधिक मरीजों का इलाज किया गया और सेना के इंजीनियरों के साथ 248 टन बेली ब्रिज उपकरण महत्वपूर्ण संपर्क बहाल करने में लगे हैं। श्रीलंका के उत्तरी प्रांत के किलिनोच्ची जिले में 110 टन वजनी 120 फुट लंबा दोहरी लेन वाला बेली ब्रिज 23 दिसंबर, 2025 को खोला गया, जो चक्रवात दितवाह से सबसे बुरी तरह प्रभावित क्षेत्रों में से एक था। इस पुल को भारत से हवाई मार्ग से लाया गया और ऑपरेशन सागर बंधु के तहत स्थापित किया गया, जिससे महत्वपूर्ण संपर्क बहाल हुआ तथा राहत एवं पुनर्निर्माण कार्यों में सहायता मिली।

घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आपदाओं के प्रति भारत की प्रतिक्रिया, उसके संस्थागत आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) ढांचे का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां तीनों सेनाओं की त्वरित तैनाती और रक्षा मंत्रालय के नेतृत्व में समन्वय एक एकीकृत भूमि-समुद्र-वायु प्रतिक्रिया को सक्षम बनाता है। इस प्रकार का परिचालन अनुभव हाल ही में शुरू की गई बहु-एजेंसी तैयारी गतिविधियों को प्रत्यक्ष रूप से दिशा प्रदान करता है, जिससे भविष्य की क्षेत्रीय आपात स्थितियों के लिए आपसी सहभागिता, सूचना-साझाकरण और समग्र सरकारी संकट प्रबंधन को मजबूती मिलती है।



## हाल के घटनाक्रम और तैयारियां

विभिन्न एजेंसियों की सहभागिता पर केंद्रित ये प्रयास राष्ट्रीय व क्षेत्रीय स्तरों पर संचार, अंतर-संचालनीयता और त्वरित संकट प्रतिक्रिया को बेहतर करते हैं। असैन्य प्रशासन, सशस्त्र बलों और आपदा प्रबंधन से जुड़े प्रमुख हितधारकों के बीच समन्वयपूर्ण वृष्टिकोण को बढ़ावा देते हुए ये प्रयास संबंधित क्षेत्र के ज्ञान, अनुभव तथा सर्वोत्तम कार्य प्रणालियों के आदान-प्रदान को सक्षम बनाती हैं। ये सभी

मिलकर बड़े पैमाने पर आपात स्थितियों के दौरान तैयारी, त्वरित लाम्बंदी एवं प्रभावी संयुक्त सर्वक्षेत्रीय अभियानों को बढ़ाते हैं और सहयोगात्मक आपदा जोखिम न्यूनीकरण (एचएडीआर) प्रबंधन की आवश्यकता को सुदृढ़ करते हैं।

**अभ्यास समन्वय (2022)** भारतीय वायु सेना ने 28-30 नवंबर 2022 को आगरा वायुसेना स्टेशन पर वार्षिक संयुक्त आपदा जोखिम निवारण अभ्यास समन्वय 2022 का आयोजन किया। इसमें राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी (एनडीएमए), राष्ट्रीय आपदा सुरक्षा बल (एनडीआरएफ), डीआरडीओ, बीआरओ, आईएमडी और नागरिक प्रशासन के प्रतिनिधियों के साथ-साथ आसियान देशों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। अभ्यास में आपदा प्रबंधन पर एक सेमिनार, बहु-एजेंसी क्षमता प्रदर्शन और संस्थागत तैयारियों का परीक्षण करने के लिए एक टेबलटॉप अभ्यास शामिल था।

**अभ्यास चक्रवात (2023)** भारतीय नौसेना द्वारा 9-11 अक्टूबर 2023 को गोवा में वार्षिक संयुक्त आपदा जोखिम निवारण अभ्यास "चक्रवात 2023" का आयोजन किया गया, जिसमें सशस्त्र बलों, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी (एनडीएमए) और राष्ट्रीय आपदा सुरक्षा बल (एनडीआरएफ) जैसी प्रमुख राष्ट्रीय एजेंसियों ने भाग लिया। इस अभ्यास में आठ मित्र विदेशी देशों कोमोरोस, मेडागास्कर, मालदीव, मॉरीशस, मोज़ाम्बिक, सेशल्स, श्रीलंका और तंजानिया ने भी भाग लिया, जिससे क्षेत्रीय सहयोग को मजबूती मिली। इस अभ्यास का मुख्य उद्देश्य समन्वित आपदा प्रतिक्रिया, आपसी सहभगिता बढ़ाना और बड़े पैमाने पर आपात स्थितियों के लिए संयुक्त तैयारी पर ध्यान केंद्रित करना था।

**अभ्यास संयुक्त विमोचन 2024** भारतीय सेना ने 18-19 नवंबर 2024 को अहमदाबाद और पोरबंदर में बहुपक्षीय वार्षिक संयुक्त आपदा जोखिम निवारण अभ्यास 'संयुक्त विमोचन 2024' का आयोजन किया, जिसमें भारत की आपदा प्रतिक्रिया तत्परता का प्रदर्शन किया गया। इस अभ्यास में भारतीय सशस्त्र बलों, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन एजेंसी (एनडीएमए), राष्ट्रीय आपदा सुरक्षा बल (एनडीआरएफ) और राज्य बलों सहित विभिन्न एजेंसियों के साथ समन्वित रसद, त्वरित प्रतिक्रिया, बचाव अभियान, हताहतों को निकालना तथा पुनर्वास शामिल थे, जो सहयोगात्मक आपदा प्रबंधन क्षमताओं को उजागर करते हैं।

**अभ्यास टाइगर ट्रायम्फ (2025)** भारत और अमेरिका के बीच त्रि-सेवा आपदा जोखिम न्यूनीकरण अभ्यास टाइगर ट्रायम्फ-2025 का चौथा संस्करण 1 से 11 अप्रैल, 2025 तक आयोजित किया गया। भारतीय पक्ष से नौसेना के युद्धपोत जलश्व, घड़ियाल, मुंबई और शक्ति, जिनमें एकीकृत हेलीकॉप्टर एवं लैंडिंग क्राफ्ट तैनात थे, के साथ लंबी दूरी के समुद्री गश्ती विमान पी-8आई, 91 इन्फैंट्री ब्रिगेड तथा 12 मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री बटालियन के सैन्य दलों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त, भारतीय वायु सेना के सी-130 विमान और एमआई-17 हेलीकॉप्टर तथा रैपिड एक्शन मेडिकल टीम भी अभ्यास का हिस्सा रहे। ये सभी इकाइयां अमेरिकी नौसेना, मरीन कॉर्प्स, सेना और वायु सेना के साथ घनिष्ठ समन्वय में कार्यरत रहीं। इस संयुक्त अभ्यास ने भारत और अमेरिका के बीच अंतर-संचालन क्षमता,

कमान व नियंत्रण प्रक्रियाओं तथा मानवीय सहायता एवं आपदा राहत से संबंधित तैयारियों को उल्लेखनीय रूप से सुदृढ़ किया।

## निष्कर्ष

भारत की मानवीय सहायता एवं आपदा जोखिम न्यूनीकरण के प्रति प्रतिबद्धता क्षेत्रीय स्थिरता को सुदृढ़ करने तथा वैश्विक सहयोग को मजबूत बनाने की उसकी व्यापक रणनीतिक दृष्टि का अभिन्न अंग है। ऐसे मिशन सशस्त्र बलों की “राष्ट्र सर्वोपरि” भावना को प्रतिबिंबित करते हैं, जो चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को लचीलापन, समन्वय और मानवीय सेवा के अवसरों में परिवर्तित करती है। मानवीय सहायता प्रयास भारत की ‘पड़ोसी प्रथम’ नीति तथा ‘वसुधैव कुटुंबकम’ – विश्व एक परिवार है – के शाश्वत भारतीय आदर्श के प्रति उसकी गहरी प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करते हैं। संकट की घड़ी में भारतीय सशस्त्र बल मित्र देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहते हैं, जो क्षेत्र में प्रथम सहायता प्रदाता के रूप में भारत की विश्वसनीय और उत्तरदायी भूमिका को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

## संदर्भ:

### रक्षा मंत्रालय

- <https://mod.gov.in/sites/default/files/Annual-Report-of-MoD-2024-25.pdf>
- [https://mod.gov.in/sites/default/files/AR\\_2023-24-new-23-9-2025.pdf](https://mod.gov.in/sites/default/files/AR_2023-24-new-23-9-2025.pdf)
- [https://mod.gov.in/dod/sites/default/files/Annual-Report-2019-20-final-web-version\\_compressed\\_0\\_0.pdf](https://mod.gov.in/dod/sites/default/files/Annual-Report-2019-20-final-web-version_compressed_0_0.pdf)
- <https://mod.gov.in/dod/sites/default/files/MoDAR2018.pdf>
- [https://mod.gov.in/sites/default/files/AR1415\\_0.pdf](https://mod.gov.in/sites/default/files/AR1415_0.pdf)
- [https://mod.gov.in/sites/default/files/MOD-English2005\\_0.pdf](https://mod.gov.in/sites/default/files/MOD-English2005_0.pdf)

### पत्र सूचना कार्यालय

- <http://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2116635>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1906761>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=1895974>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1796165>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2173436>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2088180>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=2078116>
- <https://www.pib.gov.in/newsite/erelcontent.aspx?relid=33374>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleaselframePage.aspx?PRID=2039871>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleaselframePage.aspx?PRID=1650085>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2161981>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2116801>
- <https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?ModuleId=3&NotId=155692>
- <https://www.pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=96598>
- <https://www.pib.gov.in/newsite/PrintRelease.aspx?relid=182031>

- <https://www.pib.gov.in/PressReleaselframePage.aspx?PRID=1562584>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleseDetailm.aspx?PRID=1582396>
- <https://www.pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1625337>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1626166>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleaselframePage.aspx?PRID=1965603>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1878493>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1879984>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1967119>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleaselframePage.aspx?PRID=1965929>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2121234>
- <https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2025/jun/doc2025618572301.pdf>
- <https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2197802>
- <https://www.pib.gov.in/newsite/erelcontent.aspx?relid=9283>
- <https://www.pib.gov.in/newsite/erelcontent.aspx?relid=6205>

## विदेश मंत्रालय

- [https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/39421/Operation\\_Brahma\\_\\_Support\\_to\\_Myanmar\\_continues\\_April\\_16\\_2025](https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/39421/Operation_Brahma__Support_to_Myanmar_continues_April_16_2025)
- [https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/39317/Press\\_Brief\\_on\\_Operation\\_Brahma\\_2000\\_Hrs\\_April\\_01\\_2025](https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/39317/Press_Brief_on_Operation_Brahma_2000_Hrs_April_01_2025)
- [https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/36209/Operation\\_Dost](https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/36209/Operation_Dost)
- <https://www.mea.gov.in/bilateral-documents.htm?dtl/25132>
- <https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm?dtl/25399>
- <https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/34643/Evacuation+of+Indians+and+Afghans+under+Operation+Devi+Shakti>
- [https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/32678/Mission\\_Sagar\\_Indias\\_helping\\_hand\\_across\\_the\\_Indian\\_Ocean](https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl/32678/Mission_Sagar_Indias_helping_hand_across_the_Indian_Ocean)
- [https://www.mea.gov.in/media-briefings.htm?dtl/34931/Transcript\\_of\\_Special\\_Briefing\\_on\\_Operation\\_Ganga\\_by\\_the\\_Official\\_Spokesperson\\_March\\_05\\_2022](https://www.mea.gov.in/media-briefings.htm?dtl/34931/Transcript_of_Special_Briefing_on_Operation_Ganga_by_the_Official_Spokesperson_March_05_2022)
- <https://www.mea.gov.in/press-releases.htm?dtl%2F40354%2FIndia+Undertakes+Operation+Sagar+Bandhu+for+Emergency+HADR+Assistance+to+Sri+Lanka+following+Cyclone+Ditwah=>
- <https://www.mea.gov.in/distinguished-lectures-detail.htm?492&utm>
- <https://www.hcicolombo.gov.in/section/press-releases/2under-operation-sagar-bandhu-1000-tonnes-of-relief-material-from-tamil-nadu-arrives-in-sri-lanka>
- <https://www.mea.gov.in/rajya-sabha.htm?dtl%2F39214%2FQUESTION+NO2324+RELIEF+AND+MEDICAL+ASSISTANCE+TO+OTHER+NATIONS>

## भारतीय उच्चायोग, कोलंबो श्रीलंका

<https://www.hcicolombo.gov.in/section-detail.php?pageid=press-releases&id=1operation-sagar-bandhu-india-extends-immediate-humanitarian-relief-to-sri-lanka-amid-cyclone-ditwah>

## राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण/राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल/राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान

- [https://ndma.gov.in/sites/default/files/PDF/Guidelines/HADR\\_Guideline\\_Oct\\_2024.pdf](https://ndma.gov.in/sites/default/files/PDF/Guidelines/HADR_Guideline_Oct_2024.pdf)
- <https://www.ndrf.gov.in/en/operations/super-cyclone-amphan-2020>
- <https://nidm.gov.in/pdf/pubs/proc%20ukw-13.pdf>
- <https://ndma.gov.in/Governance/Guidelines>

## भारतीय सेना

- <https://www.indianarmy.nic.in/command/command/operation-sadbhavana-northern-command>
- [https://x.com/GajrajCorps\\_IA/status/1873783728431935714](https://x.com/GajrajCorps_IA/status/1873783728431935714)
- [https://x.com/GajrajCorps\\_IA/status/1899513479616451024](https://x.com/GajrajCorps_IA/status/1899513479616451024)

## आकाशवाणी

- <https://www.newsonair.gov.in/operation-sadbhavana-indian-armys-trishakti-corps-demonstrate-unwavering-support-for-north-sikkims-remote-communities-in-naga-rangrang-villages>

## वाणिज्य मंत्रालय

[https://commerce.gov.in/wp-content/uploads/2020/08/MOC\\_637315566337666544\\_Bulletin-09-07-2020.pdf](https://commerce.gov.in/wp-content/uploads/2020/08/MOC_637315566337666544_Bulletin-09-07-2020.pdf)

## परमाणु ऊर्जा विभाग

- <https://dae.gov.in/crisis-management-group-dae/>

## पीआईबी शोध

## पीके/केसी/एनके